फरीदाबाद

मजदूर समाचार

अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें– < http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 339 1/– सितम्बर 2016

भूमिगत और सतह के टकराव

ताऊ, ये रोने-धोने के पार वाली बातें क्यों कर रहे हो ? कहाँ से आ रही हैं यह ?

हर रोज 50-60-100 लोगों से मिलना होता है। कुछ के साथ तो ऊपरी तौर पर बातचीत होती है। इन बातचीतों में क्या परेशानी हैं और क्या नहीं मिल रहा यह मोटे तौर पर होता है। फिर, यह कि आप हमारे लिये क्या कर सकते हो। यह एक रुटीन-सा है। इसी को अपने बीच में हँस कर हम रोना-धोना कहते हैं। और, जब थोड़ा समय मिल जाता है तब बातचीत का रंग बदल जाता है।

रंग कैसे बदल जाता है ?

यही तो ताज्जुब है। जैसे ही समय बढता है बातचीत खिलती है। एक दृश्य उभरता है जिसमें दिखता है कि मैनेजमेन्ट की, कम्पनी की नाक में दम करके रखा हुआ है। कुछ समय पहले जो परेशानियों के प्रवक्ता बने थे वो शीघ्र ही सामुहिक चुनौती और ढीठ, बेखौफ कुतरने-चबाने के पक्षपाती बन जाते हैं। चेहरा ही बदल जाता है। लगता है किसी और ही जीवन से बात आ रही है।

यह तो आपने देखा। इसके जरिये आप क्या कहना चाहते हो ?

मेरे प्रश्न यह हैं कि जो गम्भीर, गहरी बहस मैनेजमेन्टों के खिलाफ चल रही है आप सब में, हम सब में वह व्यक्त कैसे होती है, व्यक्त कहाँ होती है ? और एक बात यह है कि जिसको हम रोना-धोना कह रहे हैं वह इस बहस को पतला करके भूमिगत कर देता है। सतह पर रोना-धोना ही दिखाई देता है।

ताऊ , एक बात बताऊँ आपको। मैं बहुत सारे दोस्तों के साथ व्हाट्सएप ग्रुपों में हूँ। अलग-अलग फैक्ट्रियों से गुजरते हुये दोस्त बने हैं। कुछ अच्छे हैं, कुछ परिचित हैं, कुछ तो सिर्फ फोन नम्बर हैं। स्कूल वाले भी, कहीं ट्रेनिंग में मिले, कहीं कोर्स में साथ रहे सब इन ग्रुपों में आते-जाते रहते हैं। कई ग्रुप तो 250-300 तक के हैं। लेकिन एक बात है, इन सब ग्रुपों में हजारों मैसेज आते-जाते हैं पर कोई रोना-धोना नहीं होता।

अरे ! मेरा कहना तो ठीक ही है। जहाँ पर थोड़ा समय मिला, वहाँ पर रोना-धोना गायब। तुम्हारे ग्रुपों में बातें क्या होती हैं?

चुटकुले हजारों होते हैं। नेताओं पर हँसना, मैनेजरों पर हँसना, साहबों पर हँसना, टी वी एन्करों पर हँसना खूब होता है। यह हँसना ऑडियो-वीडियो-ग्रीटिंग कार्ड, सभी रूपों में चलते रहता है।

यह फैलाव लिये हँसी तो स्वयं में बेहतरीन है। फिर, रोना-धोना कहाँ से आता है ? रोना-धोना किसके सामने होता है ? और, बहस कहाँ होती है ? बहस कहाँ खिलती है ?

आपसे बातचीत करते हुये एक बात तो दिमाग में आ रही है। रोना-धोना तो गुरुओं के सामने, फिर आप जोड़ लो पुलिस के सामने, वकील के सामने, फिर आप और जोड़ लो पत्रकार के सामने, बुद्धिजीवी के सामने, युनिवर्सिटी छात्रों के सामने होता है।

हा-हा-हा-हा ! अब समझ आ रहा है कि क्यों बेचारे मजदूर, असहाय मजदूर, दुखी मजदूर की अवधारणा इतनी फैली हुई है।

पर ताऊ, अब लग रहा है कि यह बातें तो हमारे लिये नुकसानदायक ही हैं। रोना-धोना हमारे लिये कोई टेक का, लीवर का, प्रभाव उत्पन्न करने का साधन नहीं है।

आप शायद ठीक कह रहे हो। सोचना पड़ेगा। लगता तो यही है। इसलिये रोने-धोने के पार जाने की जो बात है वह यह है कि उस बहस को जो भूमिगत होती रहती है वह किस आकार, किस आकृति में उभर रही है ?

इतना मुझे पता है कि उस बहस में दम है। और वह कई हावी अवधारणाओं को बिखेर देगी।

सवाल है, किस तरह ?

दौ

समय है

✶ डब्लू-30 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित **अरावली प्रिन्टर्स** में 10 अगस्त को वरकरों ने काम बन्द कर दिया तब डायरेक्टर बोला कि जून और जुलाई माह की तनखायों 16 अगस्त को दे देंगे। जून की तनखा 20 अगस्त को दी और जुलाई की 30 अगस्त तक नहीं दी है। मजदूरों की तनखा से काटते हैं पर दो वर्ष से पी एफ की राशि जमा नहीं की है। जगह-जगह बिजली के खुले तार हैं और कई बच्चे भी यहाँ काम करते हैं। यही सब कम्पनी की 18 गुरुकुल इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में है।

✶ प्लॉट 25-26 सैक्टर-2 ए, आई एम टी मानेसर स्थित **रस्किन टाइटस** फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात सवा आठ की शिफ्ट है। महीने में 78 घण्टे ओवर टाइम को 39 घण्टे लिख कर दुगुनी दर से भुगतान दिखाते हैं। यूनियन के जरिये परमानेन्ट वरकर निकाले, 3 बचे थे और 4 इधर बेंगलुरू से लाये हैं। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 200 मजदूर हैं।

✶ प्लॉट 119 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित **क्वात्रो** कम्पनी ने **स्विफ्ट सेक्युरिटी** के जरिये 70 गार्ड रखे हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे ड्युटी पर गार्ड को 30-31 दिन के 11,500 रुपये, ई एस आई व पी एफ काट कर।

✶ प्लॉट 74-75 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित **रॉयल टूल्स** फैक्ट्री में पावर प्रैस रात 10½ तक बन्द कर देते हैं क्योंकि बगल में गाँववाले शोर पर एतराज करते हैं। असेम्बली और पैकिंग में रोज रात 3 बजे तक काम। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम। मानेसर, टपुकड़ा, गुड़गाँव में होण्डा और सुजुकी दुपहिया फैक्ट्रियों के पार्ट्स ले जाते 14 ड्राइवरों की ड्युटी सुबह 5 बजे आरम्भ होती है और रात 2½-3 तक फारिग होते हैं। सब मजदूरों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा — 50 ऑपरेटरों की 7400 रुपये और 250 हैल्परों की 6200-6500 रुपये।

✶ डी-30 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित **डीटेल्स** एक्सपोर्ट फैक्ट्री के मजदूर इक्ट्ठे हो कर 31 अगस्त को कम्पनी चेयरमैन के पास गये तो साहब बोला कि उसे पता ही नहीं था कि 700 मजदूरों की जुलाई की तनखा नहीं दी है, कल दे देंगे।

✶ प्लॉट 135 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित **ग्रोवर सन्स एपरेल्स** फैक्ट्री में महिला मजदूरों की तनखा 6000-6500-7000 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, ओवर टाइम के मात्र 25 रुपये प्रतिघण्टा। तनखा देरी से, 18-20 तारीख को। एडवान्स देते हैं 30 तारीख को!

✶ प्लॉट 274 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित **पर्ल ग्लोबल** फैक्ट्री में 50 परमानेन्ट वरकर और छह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1200 मजदूर। नवम्बर 2015 में नये ग्रेड लागू हुये तब सैम्पलिंग टेलरों की तनखा 8800 रुपये की। जनवरी में आया डी ए नहीं दिया — एच आर वाले बोले कि तनखा गलती से बढा दी थी। इसी बहाने सैम्पलिंग टेलरों के दुगुनी दर से ओवर टाइम को सिंगल रेट से कर दिया और उपस्थिति भत्ते के 250 रुपये भी बन्द कर दिये। जबकि कम्पनी के प्लॉट 73 से यहाँ भेजे सैम्पलिंग टेलरों की तनखा 9200 रुपये और अटेन्डैन्स के 500 रुपये।

✶ प्लॉट 59 सैक्टर-6, फरीदबाद स्थित **ओरियन्ट इलेक्ट्रिक** फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 70 हैल्परों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा, 6500 रुपये। और इन 6500 में से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं। रोज 12 घण्टे ड्युटी और एक दिन छोड़ कर लगातार 24 घण्टे ड्युटी। हैल्परों के महीने में 170-180 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान सिंगल रेट से।

✶ बी-314 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित **सोपान ओवरसीज** फैक्ट्री में 400 मजदूरों की रोज 12 घण्टे की ड्युटी। हैल्परों को प्रतिदिन 12 घण्टे पर तीस दिन के 9000 रुपये, आल्टरमैन को 10,500 रुपये। टेलर पीस रेट पर, रोज 12 घटे पर तीस दिन के 10,500-11,000 रुपये बनते हैं। पे-स्लिप दे कर वापस ले लेते हैं। टेलरों से 8 घण्टे 26 दिन के 15,500 रुपये पर हस्ताक्षर करवाते हैं।

✶ प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित **जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स, जय उशिन, जय ऑटो** फैक्ट्रियों में शिफ्ट अलाउन्स 750 रुपये पुराने वरकरों को देते हैं पर इधर अप्रैल से भर्ती हुओं को नहीं देते। छोटी-सी बात पर रिजाइन और कार्ड बदल देते हैं, नये भर्ती को कन्वेयन्स भत्ता नहीं देते। बारहवीं पास को महीने में जो 150 रुपये अतिरिक्त देते थे वे इस वर्ष जनवरी से बन्द कर दिये। हर वर्ष 300-500 रुपये वेतन वृद्धि थी पर 2015 से यह नहीं किया है।

✶ प्लॉट 212 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित **मनीसेन्ट्रा** फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 7600 रुपये — कहते हैं सरकार से पत्र नहीं आया है। और बगल में प्लॉट 211 स्थित **सिंह इन्टरप्राइजेज** में हैल्पर की तनखा 7000 रुपये, ओवर टाइम 16 रुपये प्रतिघण्टा (78 रुपये की जगह)।

✶ प्लॉट 78 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित **इम्पीरियल ऑटो** फैक्ट्री में फरनेस विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और टेल्को विभाग में 10½ घण्टे की एक शिफ्ट। ओवर टाइम मात्र 23 रुपये प्रति घण्टा। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर काम करते हैं और जो 20 परमानेन्ट हैं वो काम करवाते हैं। ✶ सीकरी, फरीदाबाद स्थित **विक्टोरा टूल्स** फैक्ट्री में 10½-10½ घण्टे की दो शिफ्ट। 100 घण्टे ओवर टाइम को 50 घण्टे दिखा कर सिंगल रेट से किये भुगतान को दुगुनी दर से दिखाते हैं। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600 मजदूरों की तनखा से ई एस आई व पी एफ के पैसे काटते हैं पर फण्ड में बहुत लफड़ा करते हैं।

मैनेजमेन्ट गुरु का शीर्षासन

डी-103 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित **कोन्टेन्ट्रा टेक्नोलॉजी** कम्पनी ने दस दिन देरी से, फिर बीस दिन देरी से, फिर दो महीने बाद एक महीने का वेतन देने का सिलसिला चला कर 2015 मई तक वरकरों की 9 महीनों की तनखायें बकाया कर दी थी। कम्प्युटर ऑपरेटर, इन्टरनेट पर कार्य करते उच्च कुशल 500 वरकर। एक विभाग के 100 वरकरों ने मई और जून 2015 में दो महीने काम बन्द किया। वे कम्पनी आते, विभाग में बैठते, कम्प्युटर ऑपरेट नहीं करते। इन स्त्री व पुरुष वरकरों द्वारा पैदा किये दबाव के कारण कम्पनी ने सब वरकरों को दो महीने का बकाया वेतन दिया और तब से हर महीने तनखा का भुगतान किया जा रहा है। लेकिन सात महीनों की तनखायें अब भी बकाया है।

अर्थशास्त्री और मैनेजमेन्टों को शिक्षा देने के 25 वर्षीय अनुभव वाले प्रोफेसर अरिन्दम चौधुरी ने 1996 में बहुहित सलाहकार **प्लानमैन** कम्पनी की स्थापना की थी। फिर 2005 में प्लानमैन ने ज्ञान आधारित और विश्व-आधार पर क्लायन्ट वाली आधुनिकतम तकनीक से लैस कोन्टेन्ट्रा टेक्नोलॉजी शुरू की। ऑनलाइन अमरीका से आते दैनिक अखबार की सामग्री का रूपान्तरण कर उसे चिरस्थाई बनाना, पुराने अखबारों-पुस्तकों का डिजिटल रूपान्तरण, शिक्षा क्षेत्र में पार्टनर वाली कोन्टेन्ट्रा टेक्नोलॉजी का मुख्यालय नई दिल्ली में, शाखा अमरीका में सिनसिनाटी में, कार्यालय सिंगापुर और ब्रुसेल्स में।

कोन्टेन्ट्रा टेक्नोलॉजी कम्पनी कम्प्युटरों में प्रवीण युवाओं को ट्रेनी के नाम पर 6000 रुपये मासिक पर रखती है। कोई ट्रेनिंग नहीं, सीधे कार्य में लगा देना। फिर 4 महीने बाद ई एस आई तथा पी एफ काट कर 12वीं पास को 7100 और स्नातक को 7741 रुपये मासिक। छह महीने बाद परमानेन्ट का पत्र लेकिन तनखा वही। डेढ वर्ष बाद महीने के 8000 तथा 9500 रुपये। वरकरों के विरोध से पार पाने के लिये मैनेजमेन्ट गुरु की कम्पनी ने अपने ज्ञान भण्डार से सब नुस्खे अपनाये हैं। कोर्ट-कचहरी में मामलों को लटकाने के लिये कम्पनी में पूरा एक विभाग है। मार्च से वरकर कम होने लगे और अब 500 में से 250 बचे हैं। कम्पनी लड़खड़ा रही है।

बहुत कमजोर और बहुत-ही कमजोर कम्पनियों के इस दौर में 37-40 दिन काम करने के बाद 30 दिन के पैसे जो कम्पनी नहीं दे सकती उस पर रत्ती-भर भरोसा करना दलदल में धँसते जाने की राह है।

बिचौलियों की शवयात्रा

✶ टपुकड़ा, राजस्थान स्थित **होण्डा दुपहिया** फैक्ट्री में युवा वरकरों के बीच जोड़ों-तालमेलों ने मैनेजमेन्ट की नाक में दम किया। पुलिस एक्शन द्वारा फरवरी में 400 परमानेन्ट और 4000 ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर निकाला। बिचौलियों ने गुड़गाँव, जयपुर, अलवर चक्कर कटवा कर इन मजदूरों को थकाया। जून में समझौते के बाद यूनियन ने होण्डा मैनेजमेन्ट और राजस्थान सरकार के श्रम विभाग को धन्यवाद दिया। चार हजार टेम्परेरी वरकरों में से एक को भी ड्युटी पर नहीं लिया। परमानेन्ट में 256 को लिया, 47 निलम्बित, 102 बरखास्त। मैनेजमेन्ट के "मुकरने" के विरोध में यूनियन द्वारा फिर ज्ञापन-प्रदर्शन-धरना.. ... ट्रक से काँवड़ यात्रा निकाली। देवों के देव, भगवान भोलेनाथ होण्डा मैनेजमेन्ट को सद्बुद्धि दें ताकि निकाले गये श्रमिकों को वापस ले।

✶ सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर में मारुति सुजुकी परिसर के अन्दर स्थित **बेलसोनिका ऑटो कम्पोनेन्ट्स** फैक्ट्री मैनेजमेन्ट डेढ वर्ष से श्रम विभाग और कोर्ट-कचहरी वाले बिचौलियों के अखाड़े में आराम से थी। इधर जुलाई में टेम्परेरी और परमानेन्ट वरकरों द्वारा फैक्ट्री के अन्दर उठाये कदमों से हड़बड़ाई मैनेजमेन्ट ने 3 अगस्त को यूनियन से समझौता किया। लीडरों ने घोषणा की कि निकाले हुओं में पहले वो मजदूर अन्दर जायेंगे जिन्हें ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा है, फिर ट्रेनी, फिर परमानेन्ट। टरमिनेट और निलम्बित परमानेन्ट वरकर 8 अगस्त को फैक्ट्री के अन्दर गये। बाहर किये ट्रेनी को 10 अगस्त को अन्दर लिया। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे जो बाहर थे वो सब बाहर ही और 21 अगस्त से नेता ने कम्पनी घाटे में जा रही है कह कर ओवर टाइम करने को कहा। प्रेस शॉप में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। यह क्या ?! 29 अगस्त को 4 को तथा फिर कुछ और अन्दर लेने के बाद भी ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे जिनको बाहर किया था उनमें से 39 मजदूर सितम्बर आरम्भ में बाहर ही हैं। फैक्ट्री में 89 परमानेन्ट मजदूर, 354 ट्रेनी, और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 500 वरकर। कल सूरज पश्चिम से नहीं निकलेगा।

✶ प्लॉट 753-54 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित **नपीनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स** फैक्ट्री में 5-6-7 वर्ष से काम कर रहे 65 मजदूरों को जनवरी में एक दिन अचानक नौकरी से निकाल दिया। फिर 28 जून को कम्पनी की प्लॉट 7 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर फैक्ट्री से ऐसे ही 140 मजदूर निकाले। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे मजदूरों ने परमानेन्ट वरकरों के साथ मिल कर 2010 से कम्पनी की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 2012 में यूनियन का रजिस्ट्रेशन, परमानेन्ट मजदूर ही कानून अनुसार यूनियन के सदस्य। टेम्परेरी और परमानेन्ट वरकरों के बीच तालमेलों को कमजोर करने के यूनियन के प्रयास अप्रैल 2014 में सिरे चढने लगे थे जब मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते में परमानेन्ट व टेम्परेरी की तनखा में काफी भेद पैदा किया। अब 2016 में बिचौलियों के सहयोग से कम्पनी सब पुराने टेम्परेरी वरकरों को निकाल पाई है। और, नये टेम्परेरी वरकर, फिक्स टर्म ऑपरेटर कम्पनी तथा बिचौलियों का नये सिरे से बाजा बजाने में लगे हैं।

✶ प्लॉट 330 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित **पाइन प्रिसीजन** फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने में 130 से 240 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से भी कम। बीमार होने पर भी हाफ डे नहीं, डबल मशीन चलाओ, बहुत गर्द और मास्क नहीं, साबुन नहीं, जूते-वर्दी नहीं, प्रोडक्शन टारगेट बहुत ज्यादा, 12 धण्टे में कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती...... प्रोब्लम ही प्रोब्लम। कुशल काम, बारीक काम— मारुति सुजुकी और विक्रम साराभाई स्पेस सैन्टर के लिये पार्ट्स बनाना। राहत के लिये 50 परमानेन्ट वरकरों ने 200 टेम्परेरी वरकरों के साथ तालमेल बढाने की बजाय यूनियनों की तरफ देखा। पहले इन्कलाबी मजदूर केन्द्र के पास गये पर उनसे बात बनी नहीं। अब दो साल से सीटू वालों के पास हैं। तीन महीने पहले जो 3 परमानेन्ट वरकर यूनियन पदाधिकारी बने थे उन्हें मैनेजमेन्ट ने निकाल दिया। 15 दिन पहले 2 और परमानेन्ट वरकर जो यूनियन पदाधिकारी बने उन्हें निकाल दिया। अब 5 परमानेन्ट वरकरों को चेतावनी पत्र फैक्ट्री में 4 स्थानों पर चिपकाये हैं। दो सितम्बर को यूनियन ने हड़ताल के लिये रोकने को कहा पर टेम्परेरी वरकरों के साथ कुछ परमानेन्ट भी फैक्ट्री के अन्दर गये और फैक्ट्री चली। मीटिंग में लीडर बोलते हैं तसल्ली रखो, तसल्ली रखो।

साझेदारी

✶ मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापते हैं। आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— शुक्रवार, 30 सितम्बर को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 29 सितम्बर को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— शनिवार, 1 अक्टूबर को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में सितम्बर में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

ई एस आई : — दर्द से परेशान, चार महीने से चक्कर लगा रहा हूँ। पित्त की थैली में 20 एम एम की पथरी है, ऑपरेशन करना होगा, ई एस आई मेडिकल कॉलेज ने तारीख 20 सितम्बर 2017 दी है।

— सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर में ई एस आई अस्पताल में वरकर बहुत परेशान होते हैं। सोमवार को गया तो बोले कल आना। मंगलवार ऑपरेशन का दिन है। ओ पी डी बन्द रहती है, पर्ची ही नहीं बनाते क्योंकि डॉक्टर एक ही है। — मानेसर में ई एस आई डिस्पैन्सरी में गर्मियों में साँय टाइम 5 से 7 बजे है पर 6 बजे ही पर्ची बनाना बन्द कर देते हैं।

— सैक्टर-9 गुड़गाँव में ई एस आई अस्पताल में महिलाओं वाली ओ पी डी वाले मरीजों को घुमाते हैं, गलत विभाग में भेज देते हैं, जो टैस्ट लिखते हैं वह होता नहीं है। इमरजेन्सी में भी अल्ट्रासॉउण्ड की तारीख दो महीने बाद की देते हैं।

न बोले, न उठे

बी-134 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित **वीयरवेल** फैक्ट्री में गारमेन्ट उद्योग के ऑफ सीजन में भी रोज 12 घण्टे की ड्युटी और रविवार को भी काम। अब सीजन शुरू हो रहा है, महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम होगा — टेलर सुबह 9½ से रात 2 बजे तक और फिनिशिंग वालों की कई फुल नाइट भी। ओखला स्थित फैक्ट्रियों में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 80-90 प्रतिशत मजदूरों को नहीं दिया जाता पर वीयरवेल वरकर यह लेते हैं। लेकिन ओवर टाइम का भुगतान वीयरवेल में भी दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। नेक्स्ट, मार्क्स एण्ड स्पेन्सर, मैंगो, फोरएवर 21 आदि यूरोप तथा अमरीका में वीयरवेल के क्लायन्ट हैं।

15 अगस्त को दिल्ली सरकार द्वारा नये न्यूनतम वेतन की घोषणा के बाद बीबी डायरेक्टर ने रोज 12½ बजे फैक्ट्री में आना और रात 9½ तक चक्कर लगाना शुरू किया। बहुत चिक-चिक करना। महिला मजदूरों को कुछ ज्यादा ही डाँटने लगी : काम नहीं करती और कम्पनी से नोटों की गड्डियाँ ले जाती हो। महिला मजदूर उसके सामने कुछ नहीं बोलती। आपस में : महीने में बीस लाख का उत्पादन करती हैं तब 9500 ले जाती हैं। महिला मजदूर तो डायरेक्टर की चिक-चिक से नहीं भड़की पर 7 पुरुष टेलर उसके फेर में आ गये और गुस्से में इस्तीफे दे बैठे।

आपस में चर्चायें हुई। सिलाई कारीगरों ने फिनिशिंग वरकरों से बातचीतें की। और, 22 अगस्त को सुबह 9½ बजे मजदूरों ने काम शुरू नहीं किया। लाइनों में अपनी-अपनी मशीन पर 400 टेलर बैठ गये। फिनिशिंग के 200 वरकर टेबलों पर अपने-अपने स्थान पर शान्त-स्थिर। बीबी डायरेक्टर और बेटा डायरेक्टर 10½ बजे ही फैक्ट्री पहुँच गये। बोले : जिसने काम करना है वह काम करे और जिसने नहीं करना वह फैक्ट्री से बाहर जाये। डायरेक्टरों से कोई वरकर कुछ नहीं बोला-बोली। सब मजदूर काम बन्द किये जस के तस रहे। फैक्ट्री में 9 घण्टे रहने के बाद साँय 6½ सब वरकर अपने निवास स्थानों पर चले गये।

23 अगस्त को फिर सुबह 9½ बजे 600 मजदूर फैक्ट्री के अन्दर पहुँचे। फिर काम आरम्भ नहीं किया। बेटा डायरेक्टर 10 बजे पहुँच गया और बोला कि किसी को नहीं निकालेंगे। काम शुरू।

टी ब्रेक का अरबनामा

प्लॉट 149-150 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित **सिग्मा मोल्डिंग एण्ड स्टैम्पिंग** फैक्ट्री में 11 अगस्त को ढाई बजे टी-ब्रेक में वरकर कैन्टीन गये। चाय पी। फिर अपने-अपने कार्यस्थल पर कोई नहीं गया। सब मजदूर प्रेस शॉप में जा कर बैठ गये। सुपरवाइजर आये, इंजीनियर आये, प्रोडक्शन मैनेजर आया। सब वरकर बैठे रहे। कैसे बैठे हो ? कोई मजदूर कुछ नहीं बोला तब प्रोडक्शन मैनेजर ने नाम ले कर एक वरकर से पूछा। बताया : एच आर मैनेजर ने तनखा बढाने और अप्रैल से एरियर देने की बात कही थी, नहीं दिये, इसलिये सब बैठे हैं। साहब : आप से प्रोडक्शन बढाने को बोलते हैं, आप नहीं बढाते, किसी कारणवश पैसे रुक गये, आपको मिल जायेंगे, काम करो। सब मजदूर बैठे रहे। हड़बड़ी में एच आर का बन्दा आया और बोला : मैनेजर साहब कम्पनी की सैक्टर-3 वाली फैक्ट्री में गये हैं, आयेंगे तब बात करेंगे, तब तक आप लोग काम करो। सब वरकर बैठे रहे। एच आर मैनेजर आया और बोला हो जायेगा। काम शुरू। एरियर के साथ 16 अगस्त को पैसे देने आरम्भ किये।

फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मारुति सुजुकी कार के पार्ट्स बनाते हैं। मुश्किल से 10 परमानेन्ट मजदूर हैं, तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये 500 वरकर रखे हैं। अप्रैल में वेतन वृद्धि नहीं की तो मजदूरों में चर्चायें होने लगी। बातचीतें बढी। एक दिन टी-ब्रेक में एच आर मैनेजर कैन्टीन पहुँचा और बोला था कि जुलाई की तनखा में वेतन वृद्धि होगी और साथ में अप्रैल से एरियर भी देंगे।

छोटी चोरी और दादागिरी के खिलाफ

✶ यह मेरी पहली नौकरी थी। छोटी फैक्ट्री थी। मुझे भट्टी पर हवा मारने पर लगाया। तीन भट्टी थी, कभी इस पर और कभी उस पर। कभी-कभी एक वी एम सी और 4 सी एन सी मशीनों के नीचे से बुरादा निकालने में लगा देते। ड्युटी सुबह 8½ से रात 8½ तक। रविवार को दोपहर दो बजे छुट्टी। तनखा बताई 6500 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। तनखा देरी से।

मैं 3 जून को लगा था और 18 जुलाई को तनखा दी तब 6500 की बजाय 5500 के हिसाब से 7000 रुपये दिये। मैनेजर से तनखा कम क्यों करी पूछा तो उन्होंने फोरमैन को बुलाने को कहा। मैंने फोरमैन से कहा तो उसने मुझे थप्पड़ मारा। तब मैंने फोरमैन का कॉलर पकड़ा। ऑफिस से देख रहे मैनेजर और डायरेक्टर ने आ कर छुड़ाया।

मैंने पिताजी को बताया। उन्होंने पुलिस और श्रम विभाग में लिखित शिकायतें करवाई। नोटिस पहुँचे तो कम्पनी ने वरकर भेजे कि आओ और समझौता कर लो। मैं नहीं गया। मैनेजर आया। हम ने न्यूनतम वेतन 8000 रुपये और ओवर टाइम दुगुनी दर से के अनुसार 3 जून से 18 जुलाई का हिसाब लगाया था, 24000 रुपये बने थे। मुझे 7000 रुपये दिये थे। मैनेजर को यह बताया। वह बकाया पैसे देने को राजी था। तब हम बस्ती के एक बुजुर्ग के साथ मैनेजर संग फैक्ट्री गये। बकाया के 17,000 रुपये दिये तब मैंने समझौते पर दस्तखत किये।

✶ फैक्ट्री से 16 फरवरी को ब्रेक। कई जगह काम ढूँढा। नहीं मिला। तब एन एच 1 में एक दुकान पर 5 अप्रैल से नौकरी करने लगा। ड्युटी सुबह 9 से साँय 7 की। रविवार छुट्टी। रोज 10 घण्टे ड्युटी पर महीने के 6500 रुपये।

पैसे कम और चिक-चिक ज्यादा। मैंने 13 मई को नौकरी छोड़ दी। मुझे 6500 रुपये ही दिये। पाँच दिन के 300 रुपये माँगे तो दुकानदार का बेटा बोला भाग जा, यहाँ दिखाई मत देना, तुझे बहुत मारुँगा। उसने डण्डा उठाया तो मैं चला आया।

पिताजी को बताया। उन्होंने दुकानदार से फोन पर बात की तो वह बोला कि जो करना है कर लो। हम ने पहले तो पुलिस में शिकायत की और फिर श्रम विभाग में। सी एम विण्डो पर भी शिकायत की। अब, 5 सितम्बर को जा कर लेबर इन्सपैक्टर के सम्मुख न्यूनतम वेतन 7976 रुपये और 2 की बजाय 1 घण्टे रोज ओवर टाइम मान कर दुकानदार ने 5200 रुपये मुझे दे कर समझौता किया।

✶ हरियाणा सरकार ने 1 जुलाई 2016 से देय मँहगाई भत्ता (डी ए) सितम्बर-आरम्भ तक घोषित नहीं किया है।

✶ दिल्ली सरकार ने नये ग्रेड की घोषणा की परन्तु सितम्बर आरम्भ तक लागू करने की तारीख तय नहीं है ।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।